शक्ति

- हॉल मारगेन्थाऊ ने शक्ति की परिभाषा करते हुए कहा है कि यह " किसी एक व्यक्ति के द्वारा अन्य व्यक्तियों के दिमाग और उनके क्रियाकलापों को नियंत्रित करने का नाम है।
- कौटिल्य के अनुसार :- शक्ति वह क्षमता है जो तीन गुणों से मिलकर बनती है। ये गुण है - ज्ञान, सैन्य बल और शौर्य
- वर्नान वॉन डाइक ने लिखा था कि - शक्ति एक साथ दोहरी भूमिका निभाती है " यह राज्यों के लक्ष्यों तथा का सरताज भी है और इनके वर्चस्व को स्थापित करने का साधन भी।

शक्ति
↓
सत्ता (प्राधिकार) प्रभाव बल

- शक्ति के निम्नलिखित तत्व है।

क - मूर्त तत्व → जनसंख्या एक ऐसा तत्व है जिसे आसानी से प्रकट रूप मे गिना जा सकता है। इसलिए यह शक्ति का एक मूर्त तत्व है।

ख - भू - भाग - शक्ति का दूसरा मूर्त तत्व भू-भाग है। इस तत्व के महत्वपूर्ण घटकों मे राष्ट्र का आकार, इसका वातावरण व मौसम, भौगोलिक बनावट तथा नक्शे मे इसका स्थान आदि शामिल है।

ग - जलवायु - इसी प्रकार किसी देश की जलवायु भी उसकी शक्ति को प्रभावित करती है।

घ - प्राकृतिक संसाधन - किसी देश के शक्ति निर्माण मे उस देश मे उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनो

Scanned By Scanner Go

के प्रकार प्रभावी भूमिका निभाते हैं। तीन तत्व [illegible]

कृषि क्षमता – शक्ति का एक अंग तत्व है कृषि क्षमता है।

सैन्य क्षमता – शक्ति का एक अंग तत्व सैन्य क्षमता भी है। परम्परा से चली आ रही कहावत भी इस बात को पुष्ट करती है।

* असन्तुलित शक्तियों से बनी हुई दुनिया में प्रत्येक राष्ट्र राज्य अपने अधिकाधिक लाभ के लिए अपनी शक्ति का प्रदर्शन और उसका उपयुक्त प्रयोग करते हैं।

* शक्ति सन्तुलन से मोटे तौर पर ऐसी स्थिति का बोध होता है जहाँ विभिन्न राष्ट्र लगभग बराबर की ताकत के साथ एक दूसरे के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। ऐसे तरीके अपनाए जाते हैं जिनसे शक्ति का सन्तुलन बना रहे।

Dr. Rama Kant Pandey
S.R.A.P College
Bara chakiya

Pol. sci (Hons)
Part - II
Paper - II

Scanned By Scanner Go